This question paper contains 3 printed pages.

Your Roll No. ....

Sl. No. of Ques. Paper : 5172 **G**

Unique Paper Code : **205155**

Name of Paper : **Katha Evam Sansmaran Sahitya**

Name of Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : **I**

Duration : **3 hours**

Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास का परिचय दीजिए।

अथवा

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए। 9

2. हिन्दी संस्मरण के उद्‌भव और विकास का परिचय दीजिए।

अथवा

महादेवी वर्मा ने अपने संस्मरण साहित्य में किन समस्याओं को उठाया है? विचार कीजिए। 9

3. किसी **एक** गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 9

(क) कश्मीर स्वर्ग है और कश्मीर का शालीमार स्वर्गोद्यान। उसी स्वर्गोद्यान में बड़े-से चिनार के पेड़ के नीचे सब बैठे हैं। बाहर झील में उनका बजरा ठहरा है। जहाँ बैठे हैं, मखमली-सी दूब का कालीन दूर तक फैला हुआ है। सामने ही नहर है। किलोल खाती बह रही है, मछलियाँ उसमें खेल रही हैं। वह नहर बहती-बहती फिर संगमरमर के प्रपात पर जा उतरती है, धीरे-धीरे बलखाती, इठलाती और खेलती हुई। मानो शहंशाह शाहजहाँ की सौंदर्य-कल्पनाधारा जलमय होकर, लहरियों का शुभ-नील हल्का वसन पहनकर, हमें अपनी अठखेलियाँ दिखला रही हो!

अथवा

इस सौभाग्य को किसी की नजर न लगने पाएगी। आज उसमें ना जाने कहाँ की लाज समा गई है। धोती के बाहर अपना अंगूठा दिख जाता है, तो सिहर उठती है, सिमटकर वहीं बैठ जाने को जी होता है। आज वह अपने सौभाग्य को साथ लेकर, मन होता है, कहीं गड़कर सो जाएं कि फिर उठें ही नहीं, कहीं दुबक जाएं कि फिर दिखें ही नहीं। सिमटी-सिमटाई, सहमी-सहमी अचक से घर में घुसी और बत्ती जलाकर खाट पर बैठ गयी। रात भर नींद नहीं आयी। उसने भी व्यर्थ चेष्टा नहीं की। सारी रात न जाने कहाँ-कहाँ उड़ती रही, धरती पर तो एक क्षण भी टिककर ठहर सकी नहीं। (परख से)

'थोड़ी-सी जगह और काफी पेड़-पौधे .... रेंगने वाले कीड़ों के लिए तो वह कुंजवन ही था।
बरसात का मौसम उस कुंजवन को बेहद घना कर देता था। रात-भर मेंढक, न्यौले और झींगुर वहां
कोलाहल मचाए रहते। पड़ोस का घर एक कविजी महाराज का था। पत्नी, तीन बच्चे और पीतल
कांसे के चार-छः मामूली बर्तन, मिट्टी के दो-तीन मटके, फटे कंबलों और पुरानी रजाईयों का
छोटा-सा ढेर, टूटी तख्तपोश .... ऊपर से फूस के छप्परों वाला पुराना मकान। गिरस्ती का बुरा हाल
था। बच्चे शायद ही तंदुरुस्त रहते हों।

अथवा

'जो हाथी के पोढ़े दांतों की सूरत होती है, उन दिनों मेरी छालों की वही सूरत थी, भीनी-भीनी-सी
कसैली खुशबू उन छालों की एक खास खूबी थी। जो भी करीब आता, नथने फैला कर गहरी सांसें
खींचा करता। चर चुकने के बाद बथानों की ओर लौटने वाले ढोर-डंगर मुझे जरूर सूंघते जाते।
'उस वर्ष पहली बार मेरी टहनियों में फलियाँ लगी थीं। पकने पर जंगली गूलर के फलों-जैसी लाल
सुर्ख और उतनी ही बड़ी दिखाई देती थीं। (बाबा बटेसरनाथ से)

(ग) "चतुर पुरुष हाट में हिरती-फिरती धनलक्ष्मी और यौवनलक्ष्मी को महत्व नहीं दिया करते मित्र! वे
उस लक्ष्मी का ही वरण करते हैं जो उन के घर में स्थायी रूप से आती हैं।" कोवलन ने सदर्प उत्तर
दिया। "साधु! यह वचन होनहार पुरुष के ही योग्य हैं। दिन-भर जगह जगह इस प्रसंग की चर्चा
रही। कोवलन के पिता ने भी सुना और श्वसुर ने भी। उन्हें अपने पुत्र पर गर्व हुआ।

अथवा

विधि का विधान बड़ा निर्मम होता है नागरला। विधाता मनुष्य के चरित्र के जिस पक्ष को विकसित
करना चाहता है, वह पक्ष यदि मौखिक उपदेशों से नहीं सँवरता तो नियति परिस्थितियों के कोड़े
मार-मारकर सँवारती है। इसका भाग्य ऐसा ही कठोर विधान रच रहा है। मेरी अंधी, उग्र अहंता को
भी ऐसी ही विकट मार पड़ी थी। जैसी प्रभु की इच्छा! उसके आगे किसी का वश नहीं चलता।
(सुहाग के नूपुर से)

12

4. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए:

(i) 'परख' भावनाओं और कर्त्तव्यों की कशमकश की यथार्थ अभिव्यक्ति है। उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

अथवा

" 'परख' उपन्यास में चित्रित पात्र बिहारी गाँधीवादी आदर्शों का प्रतीक है।" स्पष्ट कीजिए।

(ii) 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

अथवा

'सुहाग के नूपुर' की पात्र माधवी की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(iii) 'बाबा बटेसरनाथ' उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार क्या उपदेश देना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

15

'बाबा बटेसरनाथ' उपन्यास की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

हम तो कलवार और कसाई के तगादे सहें, बुढ़ापे में भगत बनकर बैठें और वहां बस वही सूखी
तनख्वाह! हमने भी तो नौकरी की है और कोई ओहदेदार नहीं थे। लेकिन काम किया, दिल खोल कर

P. T. O.

किया और आप ईमानदार बनने चले हैं। घर में चाहे अंधेरा हो, मस्जिद में अवश्य दिया जलाएँगे। खेद ऐसी समझ पर! पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया।

अथवा

"हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं? आपने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से जाएं और इस घाट के देवता को भेंट ना चढ़ावें। मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था।" 8

6. 'परदा' कहानी की मूल समस्या पर विचार कीजिए।

अथवा

'पाजेब' कहानी के बाल-पात्र आशुतोष का चरित्र-चित्रण कीजिए। 10

7. 'नाट्य सम्राट पृथ्वीराज कपूर' के आधार पर पृथ्वीराज कपूर के नाट्य-संबंधी योगदान का आकलन करते हुए उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

"सूर्यकांत त्रिपाठी निराला छायावाद के मूर्धन्य कवि हैं।" निराला की साहित्य-साधना के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए। 15